अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

तिलावत की फ़ज़ीलत

TILAVAT KI FAZILAT(HINDI)

- वाह क्या बात है आशिक़े कुरआन की ! 2
- एक हर्फ़ की दस नेकियां 3
- [illegible] सिखाने की फ़ज़ीलत 6
- तिलावत के 21 म-दनी फूल 11
- कुरआन पढ़ने वाले म-दनी मुन्नों की फ़ज़ीलत 20
- [illegible] तिलावत के 22 म-दनी फूल 21
- तर-ज-मए कुरआन के 4 म-दनी फूल 32

SC 1286

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़: शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना

व बक़ीअ़

व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम सि. 1428 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

“तिलावत की फ़ज़ीलत”

येह रिसाला **(तिलावत की फ़ज़ीलत)**

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उर्दू ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा-1,

अह़मद आबाद, गुजरात, फ़ोन : 079-25391168

MO. 9377111292, (FOR SMS ONLY)

e-mail : maktabahind@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

तिलावत की फ़ज़ीलत

शैत़ान इस रिसाले से बहुत रोकेगा मगर आप पढ़ लीजिये मा'लूमात का बेश बहा ख़ज़ाना हाथ आएगा । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمْ का फ़रमाने मग़िफ़रत निशान है, मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना पुल सिरात़ पर नूर है, जो रोज़े जुमुआ़ मुझ पर अस्सी बार दुरूदे पाक पढ़े उस के **अस्सी साल** के गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे । (اَلْجامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوْطِی ص ۳۲۰ حدیث ۵۱۹۱ دار الکتب العلمیة بیروت)

येही है आरज़ू ता'लीमे कु़रआं आ़म हो जाए
हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाए

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

वाह क्या बात है आशिक़े क़ुरआन की

हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی रोज़ाना एक बार **ख़त्मे क़ुरआने** पाक फ़रमाते थे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه **हमेशा दिन को रोज़ा** रखते और सारी रात क़ियाम (इबादत) फ़रमाते, जिस मस्जिद से गुज़रते उस में दो रक्अ़त (तहिय्यतुल मस्जिद) ज़रूर पढ़ते। तह़दीसे ने'मत के तौर पर फ़रमाते हैं : मैं ने जामेअ़ मस्जिद के हर सुतून के पास **क़ुरआने पाक** का ख़त्म और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में गिर्या किया है। नमाज़ और **तिलावते क़ुरआन** के साथ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़ुसूसी मह़ब्बत थी, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर ऐसा करम हुवा कि रश्क आता है चुनान्चे वफ़ात के बा'द दौराने तदफ़ीन **अचानक एक ईंट सरक कर अन्दर चली गई, लोग ईंट उठाने के लिये जब झुके तो येह देख कर हैरान रह गए कि आप** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه **क़ब्र में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ रहे हैं !** आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के घर वालों से जब मा'लूम किया गया तो शहज़ादी साहिबा ने बताया : वालिदे मोह़तरम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (त-बरानी)

रोज़ाना दुआ किया करते थे : **"या अल्लाह !** अगर तू किसी को वफ़ात के बा'द क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की सआदत अ़ता फ़रमाए तो मुझे भी मुशर्रफ़ फ़रमाना ।" मन्क़ूल है : जब भी लोग आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार के क़रीब से गुज़रते तो क़ब्रे अन्वर से **तिलावते कुरआन** की आवाज़ आ रही होती । (حِلْيَةُ الاولياء ج٢ ص٣٦٢-٣٦٦ مُلتَقطاً دار الكتب العلمية)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दहन मैला नहीं होता बदन मैला नहीं होता
ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ *के औलिया का तो कफ़न मैला नहीं होता*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक ह़र्फ़ की दस नेकियां

कुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद **अल्लाहु** रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ का मुबारक कलाम है, इस का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना सुनाना सब सवाब का काम है । कुरआने पाक का एक **ह़र्फ़**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (कन्ज़ुल उम्माल)

पढ़ने पर 10 **नेकियों** का सवाब मिलता है, चुनान्चे **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "जो शख़्स किताबुल्लाह का एक ह़र्फ़ पढ़ेगा, उस को एक नेकी मिलेगी जो दस के बराबर होगी । मैं येह नहीं कहता **الٓمّٓ** एक ह़र्फ़ है, बल्कि **अलिफ़** एक ह़र्फ़, **लाम** एक ह़र्फ़ और **मीम** एक ह़र्फ़ है ।" **(سُنَنُ التِّرْمِذِی ج٤ ص٤١٧ حدیث ٢٩١٩)**

तिलावत की तौफ़ीक़ दे दे इलाही
गुनाहों की हो दूर दिल से सियाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बेहतरीन शख़्स

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : **خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَهٗ :** या'नी तुम में बेहतरीन शख़्स वोह है जिस ने क़ुरआन सीखा और दूसरों को सिखाया । **(صَحِیحُ البُخارِی ج ٣ ص ٤١٠ حدیث ٥٠٢٧)** ह़ज़रते सय्यिदुना

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है। (जामेअ़ सग़ीर)

अबू अ़ब्दुर्रह़मान सु–लमी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ मस्जिद में **कुरआने पाक** पढ़ाया करते और फ़रमाते : इसी ह़दीसे मुबारक ने मुझे यहां बिठा रखा है। (فَیضُ القَدیر ج۳ ص۶۱۸ تحتَ الحدیث۳۹۸۳)

अल्लाह मुझे ह़ाफ़िज़े कुरआन बना दे
कुरआन के अह़काम पे भी मुझ को चला दे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

कुरआन शफ़ाअ़त कर के जन्नत में ले जाएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले अकरम, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जिस शख़्स ने **कुरआने पाक** सीखा और सिखाया और जो कुछ कुरआने पाक में है उस पर अ़मल किया, कुरआन शरीफ़ उस की **शफ़ाअ़त** करेगा और जन्नत में ले जाएगा।

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۴۱ ص ۳، اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرانِی ج ۱۰ ص ۱۹۸ حدیث ۱۰۴۵۰)

इलाही ख़ूब दे दे शौक़ कुरआं की तिलावत का

शरफ़ दे गुम्बदे ख़ज़रा के साए में शहादत का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

आयत या सुन्नत सिखाने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि जिस शख़्स ने **कुरआने मजीद** की एक आयत या दीन की कोई **सुन्नत** सिखाई क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआला उस के लिये ऐसा सवाब तय्यार फ़रमाएगा कि इस से बेहतर सवाब किसी के लिये भी नहीं होगा।

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطِیّ ج۷ ص۲۸۱ حدیث۲۲۴۵۴)

तिलावत करूं हर घड़ी या इलाही عَزَّوَجَلَّ

बकूं न कभी भी मैं वाही तबाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाकपढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमउज़्ज़वाइद)

एक आयत सिखाने वाले के लिये क़ियामत तक सवाब !

जुन्नूरैन, जामिउ़ल क़ुरआन ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़स्मान इब्ने अ़फ़्फ़ान** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने **क़ुरआने मुबीन** की एक आयत सिखाई उस के लिये सीखने वाले से दुगना सवाब है। एक और ह़दीसे पाक में **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जिस ने **क़ुरआने अ़ज़ीम** की एक आयत सिखाई जब तक उस आयत की तिलावत होती रहेगी उस के लिये सवाब जारी रहेगा।

(جَمْعُ الْجَوامِع ج۷ ص۲۸۲ حدیث۲۲۴۵۵-۲۲۴۵٦)

तिलावत का जज़्बा अ़त़ा कर इलाही عَزَّوَجَلَّ
मुआ़फ़ फ़रमा मेरी ख़त़ा हर इलाही عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बदबख़्त हो गया। (इब्ने

अल्लाह तआ़ला क़ियामत तक अज्र बढ़ाता रहेगा

एक ह़दीस शरीफ़ में है जिस शख़्स ने किताबुल्लाह की एक आयत या इ़ल्म का एक बाब सिखाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ता क़ियामत उस का अज्र बढ़ाता रहेगा।

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۹ ص ۲۹۰)

अ़ता हो शौक़ मौला عَزَّوَجَلَّ *मद्रसे में आने जाने का*
ख़ुदाया عَزَّوَجَلَّ *ज़ौक़ दे क़ुरआन पढ़ने का पढ़ाने का*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मां के पेट में 15 पारे ह़िफ़्ज़ कर लिये

“मल्फ़ूज़ाते आ’ला ह़ज़रत” से एक मुफ़ीद **अ़र्ज़** और ईमान अफ़रोज़ **इर्शाद** मुला–ह़ज़ा फ़रमाइये :

अ़र्ज़ : हुज़ूर “तक़रीबे बिस्मिल्लाह” की कोई उ़म्र शरअ़न मुक़र्रर है ?

इर्शाद : शरअ़न कुछ मुक़र्रर नहीं, हां मशाइख़े किराम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (मुस्लिम)

(رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام) के यहां **चार बरस चार महीने चार दिन** मुक़र्रर हैं। ह़ज़रत ख़्वाजा क़ुत़्बुल ह़क़्क़े वद्दीन **बख़्तियार काकी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ की उ़म्र जिस दिन चार बरस चार महीने चार दिन की हुई (तो) "तक़रीबे बिस्मिल्लाह" मुक़र्रर हुई, लोग बुलाए गए। **ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ भी तशरीफ़ फ़रमा हुए। बिस्मिल्लाह पढ़ाना चाही मगर इल्हाम हुवा कि ठहरो ! **ह़मीदुद्दीन नागोरी** आता है वोह पढ़ाएगा। इधर नागोर में क़ाज़ी ह़मीदुद्दीन साहि़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को इल्हाम हुवा कि जल्द जा मेरे एक बन्दे को "बिस्मिल्लाह" पढ़ा। क़ाज़ी साहि़ब फ़ौरन तशरीफ़ लाए और आप से फ़रमाया : साहि़ब ज़ादे पढ़िये ! आप ने पढ़ा : اَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ **और शुरूअ़ से ले कर पन्दरह पारे ह़िफ़्ज़ सुना दिये।** ह़ज़रत क़ाज़ी साहि़ब और ख़्वाजा साहि़ब ने फ़रमाया : साहि़ब ज़ादे आगे पढ़िये ! फ़रमाया : **मैं ने अपनी मां के**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (इब्ने अदी)

शिकम (पेट) **में इतने ही सुने थे और इसी क़दर उन** (या'नी अम्मी जान) **को याद थे, वोह मुझे भी याद हो गए !"**

(ملفوظاتِ اعلٰی حضرت ص ٤٨١ مکتبة المدینہ باب المدینہ کراچی)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ *अपनी उल्फ़त में सादिक़ बना दे*

मुझे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم *का तू आ़शिक़ बना दे*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अफ़्सोस ! इस्लामी मा'लूमात की कमी की वजह से आज मुसल्मानों की बहुत बड़ी ता'दाद क़ुरआने पाक पढ़ने पढ़ाने, सुनने सुनाने और छूने उठाने वग़ैरा के शर-ई अह़काम से ना बलद है। इशाअ़ते इ़ल्म का सवाब पाने और मुसल्मानों को गुनाहों से बचाने की निय्यत से क़ुरआने पाक के बारे में रंग बिरंगे **म-दनी फूलों** का गुलदस्ता पेश करता हूं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (मुस्लिम)

"कुरआन तमाम ही कुतुब से अफ़्ज़ल है" के इक्कीस हुरूफ़ की निस्बत से तिलावत के 21 म-दनी फूल

(1) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर** फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोज़ाना सुब्ह़ **कुरआने मजीद को चूमते थे** और फ़रमाते : "येह मेरे रब عَزَّوَجَلَّ का अ़ह्द और उस की किताब है।" (دُرِّمُختار ج ٩ ص٦٣٤ دار المعرفة بيروت) (2) तिलावत के आग़ाज़ में **अऊ़ज़ु** पढ़ना **मुस्तह़ब** है और इब्तिदाए सूरत में **बिस्मिल्लाह** सुन्नत, वरना **मुस्तह़ब** (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 3, स. 550, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची) (3) सूरए बराअत (सूरए तौबा) से अगर तिलावत शुरूअ़ की तो اَعُوْذُبِاللّٰه (और) بِسْمِ اللّٰه (दोनों) कह लीजिये और जो इस के पहले से तिलावत शुरूअ़ की और **सूरए तौबा** (दौराने तिलावत) आ गई तो तस्मिय्या (या'नी बिस्मिल्लाह शरीफ़) पढ़ने की ह़ाजत नहीं। और इस की इब्तिदा में नया तअ़व्वुज़ जो आज कल के ह़ाफ़िज़ों ने निकाला है, **बे अस्ल** है और येह जो मशहूर है कि **सूरए तौबा** इब्तिदाअन भी पढ़े जब भी बिस्मिल्लाह न पढ़े येह मह़ज़ ग़लत है (ऐजन, स.

551) **(4)** बा वुज़ू, क़िब्ला रू, अच्छे कपड़े पहन कर तिलावत करना **मुस्तह़ब** है (ऐज़न, स. 550) **(5)** कुरआने मजीद देख कर पढ़ना, ज़बानी पढ़ने से **अफ़्ज़ल** है कि येह पढ़ना भी है और देखना और हाथ से इस का छूना भी और येह सब काम **इबादत** हैं। **(غُنیَۃُ المُتَمَلّی ص٤٩٥)** **(6)** कुरआने मजीद को निहायत **अच्छी आवाज़** से पढ़ना चाहिये, अगर आवाज़ अच्छी न हो तो अच्छी आवाज़ बनाने की कोशिश करे, मगर **लह़्न** के साथ पढ़ना कि हुरूफ़ में **कमी बेशी** हो जाए जैसे गाने वाले किया करते हैं येह ना जाइज़ है, बल्कि पढने में **क़वाइदे तजवीद** की रिआ़यत कीजिये **(دُرِّمُختار، رَدُّالمُحتار ج٩،ص٦٩٤)** **(7)** कुरआने मजीद बुलन्द आवाज़ से पढ़ना **अफ़्ज़ल** है जब कि किसी नमाज़ी या मरीज़ या सोते को ईज़ा न पहुंचे **(غُنیَۃُ المُتَمَلّی ص٤٩٧)** (8) जब कुरआने पाक की सूरतें या आयतें पढ़ी जाती हैं उस वक़्त बा'ज़ लोग चुप तो रहते हैं मगर इधर उधर देखने और दीगर ह़-रकात व इशारात वग़ैरा से बाज़ नहीं आते, ऐसों की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि चुप रहने के साथ साथ ग़ौर से सुनना भी लाज़िमी है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (अबू या'ला)

जैसा कि फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 352 पर मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : क़ुरआने मजीद पढ़ा जाए उसे कान लगा कर ग़ौर से सुनना और ख़ामोश रहना **फ़र्ज़** है। قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی (अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया :)

وَ اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَ اَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ (پ۹ الاعراف ۲۰۴)

(**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रह़्म हो)

(9) जब बुलन्द आवाज़ से क़ुरआन पढ़ा जाए तो तमाम ह़ाज़िरीन पर सुनना **फ़र्ज़** है, जब कि वोह मज्मअ़ सुनने के लिये ह़ाज़िर हो वरना **एक** का सुनना काफ़ी है, अगर्चे और (लोग) अपने काम में हों। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 23, स. 353, मुलख़्ख़सन) **(10) मज्मअ़** में सब लोग बुलन्द आवाज़ से पढ़ें येह **ह़राम** है, अक्सर तीजों में सब बुलन्द आवाज़ से पढ़ते हैं येह **ह़राम** है, अगर चन्द शख़्स पढ़ने वाले हों तो हुक्म है कि **आहिस्ता** पढ़ें।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 3, स. 552)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم: जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (कन्ज़ुल उम्माल)

(11) मस्जिद में दूसरे लोग हों, नमाज़ या अपने विर्दो वज़ाइफ़ पढ़ रहे हों उस वक़्त फ़क़त इतनी आवाज़ से तिलावत कीजिये कि सिर्फ़ आप ख़ुद सुन सकें बराबर वाले को आवाज़ न पहुंचे **(12)** बाज़ारों में और जहां लोग काम में मश्ग़ूल हों बुलन्द आवाज़ से पढ़ना **ना जाइज़** है, लोग अगर न सुनेंगे तो गुनाह पढ़ने वाले पर है अगर काम में मश्ग़ूल होने से पहले इस ने पढ़ना शुरूअ़ कर दिया हो और अगर वोह जगह काम करने के लिये मुक़र्रर न हो तो अगर पहले पढना इस ने शुरूअ़ किया और लोग नहीं सुनते तो लोगों पर गुनाह और अगर काम शुरूअ़ करने के बा'द इस ने पढ़ना शुरूअ़ किया, तो इस (या'नी पढ़ने वाले) पर गुनाह (غُنْيَةُ الْمُتَمَلِّى ص٤٩٧) **(13)** जहां कोई शख़्स इल्मे दीन पढ़ा रहा है या त़ालिबे इल्म इल्मे दीन की तक्रार करते या मुत़ा-लआ़ देखते हों, वहां भी बुलन्द आवाज़ से पढ़ना मन्अ़ है। (ऐज़न) **(14)** **लैट** कर क़ुरआन पढ़ने में ह़रज नहीं जब कि पाउं **सिमटे** हों और मुंह खुला हो, यूहीं चलने और काम करने की ह़ालत में भी तिलावत जाइज़ है, जब कि दिल न बटे, वरना मक्रूह है। (ऐज़न, स. 496)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (हाकिम)

(15) **गुस्ल** ख़ाने और नजासत की जगहों में कुरआने मजीद पढ़ना, **ना जाइज़** है (ऐज़न) **(16)** **कुरआने** मजीद सुनना, तिलावत करने और नफ़्ल पढ़ने से **अफ़्ज़ल** है (ऐज़न, स. 497) **(17)** जो शख़्स ग़लत़ पढ़ता हो तो सुनने वाले पर वाजिब है कि बता दे, बशर्ते कि बताने की वजह से कीना व ह़सद पैदा न हो। (ऐज़न, स. 498) **(18)** इसी त़रह़ अगर किसी का मुस्ह़फ़ शरीफ़ (कुरआने पाक) अपने पास आ़रियत (या'नी वक़्ती तौ़र पर लिया हुवा) है, अगर उस में किताबत की ग़-लत़ी देखे, (तो जिस का है उसे) बता देना वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 3, स. 553) **(19)** **गर्मियों** में सुब्ह़ को **कुरआने मजीद** ख़त्म करना **बेहतर** है और **सर्दियों** में अव्वल शब को कि ह़दीस में है : "जिस ने शुरूअ़ दिन में **कुरआन ख़त्म** किया, शाम तक फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं और जिस ने इब्तिदाए शब में **ख़त्म** किया, सुब्ह़ तक इस्तिग़फ़ार करते हैं।" गर्मियों में चूंकि दिन बड़ा होता है तो सुब्ह़ के वक़्त ख़त्म करने में इस्तिग़फ़ारे मलाएका ज़ियादा होगी और जाड़ों (या'नी सर्दियों) की रातें बड़ी होती हैं तो शुरूअ़ रात में **ख़त्म** करने से इस्तिग़फ़ार ज़ियादा होगी। (غُنيةُ المُتَمَلّى ص٤٩٦)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم **:** जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (कन्जुल उ़म्माल)

《20》 जब कुरआने पाक **ख़त्म** हो तो तीन बार सूरए इख़्लास पढ़ना **बेहतर** है। अगर्चे **तरावीह़** में हो, अलबत्ता अगर फ़र्ज़ नमाज़ में ख़त्म करे तो एक बार से ज़ियादा न पढ़े। (غُنیۃ المتملی ص۴۹۶)

《21》 **ख़त्मे कुरआन का त़रीक़ा** येह है कि सूरए नास पढ़ने के बा'द सुरए फ़ातिह़ा और सूरए ब-क़रह से وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ۝ तक पढ़िये और इस के बा'द दुआ मांगिये कि येह **सुन्नत** है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُمَا ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं: "**नबिय्ये करीम**, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब " قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ۝ " पढ़ते तो सूरए फ़ातिह़ा शुरूअ़ फ़रमाते फिर सूरए ब-क़रह से "وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ۝" तक पढ़ते फिर ख़त्मे कुरआन की दुआ़ पढ़ कर खड़े होते।" (اَلْاِتقان فِی عُلُوْمِ الْقُرْاٰن ج۱ ص۱۵۸)

इजाबत का सहरा इनायत का जोड़ा
दुल्हन बन के निकली दुआए मुह़म्मद صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

म-दनी मुन्ने ने राज़ फ़ाश कर दिया !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना **अबुल ह़सन मुह़म्मद बिन अस्लम तूसी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपनी **नेकियां छुपाने** का बेह़द ख़याल फ़रमाते यहां तक कि एक बार फ़रमाने लगे : अगर मेरा बस चले तो मैं **किरामन कातिबीन** (आ'माल लिखने वाले दोनों बुज़ुर्ग फ़िरिश्तों) से भी छुप कर इ़बादत करूं ! रावी कहते हैं : मैं **बीस बरस** से ज़ियादा अ़र्सा आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सोह़बत में रहा मगर जुमुअ़तुल मुबारक के इ़लावा कभी आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को दो रक्अ़त नफ़्ल भी पढ़ते नहीं देख सका। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पानी का कूज़ा ले कर अपने कमरए ख़ास में तशरीफ़ ले जाते और अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लेते थे। मैं कभी भी न जान सका कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कमरे में क्या करते हैं, यहां तक कि एक दिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का **म-दनी मुन्ना ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।** उस की अम्मी जान चुप करवाने की कोशिश कर रही थीं, मैं ने कहा : **म-दनी मुन्ना** आख़िर इस क़दर क्यूं रो रहा है ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (त़-बरानी)

बीबी साहिबा ने फ़रमाया : इस के अब्बू (हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन तूसी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی) **इस कमरे में दाखि़ल हो कर तिलावते क़ुरआन करते हैं और रोते हैं तो येह भी उन की आवाज़ सुन कर रोने लगता है !** शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल हसन तूसी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی (रियाकारियों की तबाह कारियों से बचने की ख़ातिर) नेकियां छुपाने की इस क़दर सअ्य फ़रमाते थे कि अपने उस कम्रए ख़ास से इबादत करने के बा'द बाहर निकलने से पहले अपना मुंह धो कर आंखों में सुरमा लगा लेते ताकि चेहरा और आंखें देख कर किसी को अन्दाज़ा न होने पाए कि येह रोए थे ! (حلیۃ الاولیاء ج۹ ص۲۰۴)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते़ हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (त-बरानी)

سُبْحٰنَ اللہ ! एक त़रफ़ नेकियां छुपाने वाले वोह मुख़्लिस सालेह़ इन्सान और आह ! दूसरी त़रफ़ अपनी नेकियों का बढ़ा चढ़ा कर ढंडोरा पीटने वाले हम जैसे इख़्लास से आ़री नादान ! कि अव्वल तो नेकी हो नहीं पाती है कभी हो भी गई तो रियाकारी लागू पड़ जाती है । हाए ! हाए !

नफ़्से बदकार ने दिल पर येह क़ियामत तोड़ी
अ़-मले नेक किया भी तो छुपाने न दिया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

क़ुरआने करीम के ह़ुरूफ़ की दुरुस्त मख़ारिज से अदाएगी और ग़लत़ पढ़ने से बचना फ़र्ज़े ऐ़न है

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "बिला शुबा इतनी **तजवीद** जिस से तस्ह़ीहे़ ह़ुरूफ़ हो (या'नी क़वाइदे तजवीद के मुत़ाबिक़ ह़ुरूफ़ को दुरुस्त मख़ारिज से अदा कर सके), और ग़लत़ ख़्वानी (या'नी ग़लत़ पढ़ने) से बचे, **फ़र्ज़े ऐ़न** है ।" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 343)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (कन्ज़ुल उम्माल)

कुरआन पढ़ने वाले म-दनी मुन्नों की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़मीन वालों पर अ़ज़ाब करने का इरादा फ़रमाता है लेकिन जब बच्चों को **कुरआने पाक** पढ़ते सुनता है तो अ़ज़ाब को रोक लेता है ।

(سُنَنِ دارمی ج۲ ص ۵۳۰ حدیث۳۳۴۵ دار الکتاب العربی بیروت)

*हो करम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ह़ाफ़िज़ म-दनी मुन्नों के तुफ़ैल*
जग मगाते गुम्बदे ख़ज़रा की किरनों के तुफ़ैल

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **''दा'वते इस्लामी''** के तह़्त दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में बे शुमार मदारिस बनाम **मद्र-सतुल मदीना** क़ाइम हैं । जिन में ता दमे तह़रीर सिर्फ़ पाकिस्तान में पचास हज़ार म-दनी मुन्ने और म-दनी मुन्नियां ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम ह़ासिल कर रहे हैं, नीज़ ला ता'दाद मसाजिद व मक़ामात पर **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ान) का भी एहतिमाम

होता है, जिन में दिन के अन्दर काम काज में मसरूफ़ रहने वालों को उ़मूमन नमाज़े इ़शा के बा'द तक़रीबन 40 मिनट के लिये दुरुस्त **कुरआने मजीद** पढ़ना सिखाया जाता, मुख़्तलिफ़ दुआ़एं याद करवाई जातीं और सुन्नतें भी सिखाई जाती हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी बहनों के लिये भी **मदारिसुल मदीना** (बालिग़ात) क़ाइम हैं।

"ख़ूब कुरआने पाक पढ़ो" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से सज्दए तिलावत के 14 म-दनी फूल

(1) **आयते** सज्दा पढ़ने या सुनने से सज्दा **वाजिब** हो जाता है। (اَلْهِدَايه، ج ۱ ص۷۸ داراحیاء التراث العربی بیروت) (2) फ़ारसी या किसी और ज़बान में (भी अगर) आयत का तरजमा पढ़ा तो पढ़ने वाले और सुनने वाले पर सज्दा वाजिब हो गया, सुनने वाले ने येह समझा हो या नहीं कि आयते सज्दा का तरजमा है, अलबत्ता येह ज़रूर है कि उसे न मा'लूम हो तो बता दिया गया हो कि येह **आयते सज्दा** का तरजमा था और आयत पढ़ी गई हो तो इस की ज़रूरत नहीं कि सुनने वाले को **आयते सज्दा** होना बताया गया हो। (फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 1, स. 133, कोएटा) (3) **पढ़ने** में येह

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़)

शर्त़ है कि इतनी आवाज़ में हो कि अगर कोई उ़ज़्र न हो तो ख़ुद **सुन** सके। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हि़स्सा : 4, स. 728) **(4) सुनने** वाले के लिये येह ज़रूरी नहीं कि बिल क़स्द (या'नी इरा–दतन) सुनी हो, बिला क़स्द (या'नी बिला इरादा) सुनने से भी सज्दा **वाजिब** हो जाता है। (الھدایہ ج ۱ ص۷۸) **(5)** अगर इतनी आवाज़ से आयत पढ़ी कि सुन सकता था मगर शोरो ग़ुल या बहरा होने की वजह से न सुनी तो **सज्दा** वाजिब हो गया और अगर मह़्ज़ होंट हिले आवाज़ पैदा न हुई तो वाजिब न हुवा। (फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 1, स. 132) **(6) सज्दा** वाजिब होने के लिये **पूरी आयत** पढ़ना ज़रूरी नहीं बल्कि वोह लफ़्ज़ जिस में **सज्दे का माद्दा** पाया जाता है और उस के साथ क़ब्ल या बा'द का कोई लफ़्ज़ मिला कर पढ़ना काफ़ी है। (رَدُّالْمُحتار ج ۲ ص۶۹۴)

(7) सज्दए तिलावत का त़रीक़ा : सज्दे का मस्नून त़रीक़ा येह है कि खड़ा हो कर **अल्लाहु अक्बर** कहता हुवा सज्दे में जाए और कम से कम तीन बार سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی कहे,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (मजमउ़ज़्ज़वाइद)

फिर **अल्लाहु अक्बर** कहता हुवा खड़ा हो जाए, पहले पीछे दोनों बार **अल्लाहु अक्बर** कहना **सुन्नत** है और खड़े हो कर सज्दे में जाना और सज्दे के बा'द खड़ा होना येह दोनों क़ियाम **मुस्तहब** । (دُرِّمُختار ج٢ ص٦٩٩) **(8)सज्दए तिलावत** के लिये **अल्लाहु अक्बर** कहते वक़्त न हाथ उठाना है न इस में तशह्हुद (या'नी अत्तहिय्यात) है न सलाम । (تَنوِيرُالْاَبصار ج٢ ص٧٠٠) **(9)** इस की निय्यत में येह शर्त़ नहीं कि फ़ुलां आयत का सज्दा है बल्कि मुत़्लक़न **सज्दए तिलावत** की निय्यत काफ़ी है। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج٢ص٦٩٩). **(10)** आयते सज्दा बैरूने नमाज़ (या'नी नमाज़ के बाहर) पढ़ी तो फ़ौरन सज्दा कर लेना **वाजिब** नहीं हां **बेहतर** है कि फ़ौरन कर ले और वुज़ू हो तो ताख़ीर **मक्रूहे तन्ज़ीही** । (دُرِّمُختار ج٢ص٧٠٣) **(11)** उस वक़्त अगर किसी वजह से **सज्दा न** कर सके तो तिलावत करने वाले और सामेअ़ (या'नी सुनने वाले) को येह कह लेना **मुस्तहब** है : سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ٭ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾ **(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** हम ने सुना और माना, तेरी मुआ़फ़ी हो ऐ रब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बदबख़्त हो गया। (इब्ने सुन्नी)

हमारे और तेरी ही त़रफ़ फिरना है।) (پ۳،البقرۃ:۲۸۵)

(رَدُّالْمُحتار ج ۲، ص۷۰۳) (12) एक मजलिस[1] में सज्दे की एक आयत को बार बार **पढ़ा या सुना** तो एक ही सज्दा **वाजिब** होगा, अगर्चे चन्द शख़्सों से सुना हो यूंही अगर आयत पढ़ी और वोही आयत दूसरे से सुनी जब भी **एक** ही **सज्दा** वाजिब होगा।

(دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ۲ ص۷۱۲) (13) पूरी सूरत पढ़ना और **आयते सज्दा** छोड़ देना **मक्रूहे तह़रीमी** है और सिर्फ़ **आयते सज्दा** के पढ़ने में कराहत नहीं, मगर बेहतर येह है कि दो एक आयत पहले या बा'द की मिला ले। (دُرِّمُختار ج۲، ص۷۱۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیٰ محمَّد

ह़ाजत पूरी होने के लिये

(14) (अह़नाफ़ या'नी ह़-नफ़िय्यों के नज़्दीक क़ुरआने पाक में सज्दे की 14 आयतें हैं) जिस मक़्सद के लिये एक मजलिस में सज्दे की

1 : मजलिस की ता'रीफ़ व तफ़्सीलात मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द 1 ह़िस्सा 4 स. 736 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (मुस्लिम)

सब (या'नी 14) आयतें पढ़ कर सज्दे करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का **मक़्सद** पूरा फ़रमा देगा। ख़्वाह एक एक आयत पढ़ कर उस का सज्दा करता जाए या सब को पढ़ कर आख़िर में 14 सज्दे कर ले। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 4, स. 738)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِیب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

14 आयाते सज्दा

(۱) ﴿ اِنَّ الَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ یُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ یَسْجُدُوْنَ ۩ ﴾ (پ ۹ اَعْرَاف ۲۰۶)

(۲) ﴿ وَ لِلّٰهِ یَسْجُدُ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ طَوْعًا وَّ كَرْهًا وَّ ظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ ۩ ﴾ (پ ۱۳ رَعْد ۱۵)

(۳) ﴿ وَ لِلّٰهِ یَسْجُدُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ هُمْ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ ۝ یَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَ یَفْعَلُوْنَ مَا یُؤْمَرُوْنَ ۩ ﴾ (پ ۱۴ نَحْل ۴۹-۵۰)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (इब्ने अदी)

(٤) ﴿ اِنَّ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖۤ اِذَا یُتْلٰى عَلَیْهِمْ یَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ۙ﴿۱۰۷﴾
وَّ یَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿۱۰۸﴾ وَ یَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ
یَبْكُوْنَ وَ یَزِیْدُهُمْ خُشُوْعًا ﴿۱۰۹﴾ ﴾ (پ ۱۵ بَنی اِسرَائِیل ۱۰۷-۱۰۹)

(۵) ﴿ اِذَا تُتْلٰى عَلَیْهِمْ اٰیٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ بُكِیًّا ﴿۵۸﴾ ﴾ (پ۱٦ مَریَم ۵۸)

(٦) ﴿ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ یَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ فِی الْاَرْضِ وَ الشَّمْسُ
وَ الْقَمَرُ وَ النُّجُوْمُ وَ الْجِبَالُ وَ الشَّجَرُ وَ الدَّوَآبُّ وَ كَثِیْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَ كَثِیْرٌ حَقَّ
عَلَیْهِ الْعَذَابُ ؕ وَ مَنْ یُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَفْعَلُ مَا یَشَآءُ ﴿۱۸﴾ ﴾

(پ۱۷ حَج ۱۸)

(۷) ﴿ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَ مَا الرَّحْمٰنُ ۗ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا
وَ زَادَهُمْ نُفُوْرًا ﴿۶۰﴾ ﴾ (پ۱۹ فُرقَان ۶۰)

(۸) ﴿ اَلَّا یَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ یُخْرِجُ الْخَبْءَ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ یَعْلَمُ
مَا تُخْفُوْنَ وَ مَا تُعْلِنُوْنَ ﴿۲۵﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ ﴿۲۶﴾ ﴾

(پ۱۹ نَمل ۲۵-۲۶)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

(۹) ﴿اِنَّمَا یُؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ سَبَّحُوْا بِحَمْدِ
رَبِّهِمْ وَ هُمْ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ ۩﴾ (پ ۲۱ سَجدَہ ۱۵)

(۱۰) ﴿فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَ خَرَّ رَاكِعًا وَّ اَنَابَ ۩ فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَ اِنَّ لَهٗ
عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَ حُسْنَ مَاٰبٍ﴾ (پ ۲۳ صٓ ۲۴۔۲۵)

(۱۱) ﴿وَ مِنْ اٰیٰتِهِ الَّیْلُ وَ النَّهَارُ وَ الشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَ لَا
لِلْقَمَرِ وَ اسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِیَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا
فَالَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ یُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّیْلِ وَ النَّهَارِ وَ هُمْ لَا یَسْــٴَـمُوْنَ ۩﴾
(پ ۲۴ حٰمٓ السَّجدَة ۳۷۔۳۸)

(۱۲) ﴿فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَ اعْبُدُوْا ۩﴾ (پ ۲۷ نَجم ۶۲)

(۱۳) ﴿فَمَا لَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ۝ وَ اِذَا قُرِئَ عَلَیْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا یَسْجُدُوْنَ ۩﴾
(پ ۳۰ اِنشِقَاق ۲۰۔۲۱)

(۱٤) ﴿وَ اسْجُدْ وَ اقْتَرِبْ ۩﴾ (پ ۳۰ عَلَق ۱۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (इब्ने अदी)

"फ़रमाने ह़मीद" के नव ह़ुरूफ़ की निस्बत से क़ुरआने पाक को छूने के 9 म-दनी फूल

(1) अगर वुज़ू न हो तो क़ुरआने अ़ज़ीम छूने के लिये **वुज़ू** करना फ़र्ज़ है। (نُــورُالْاِیــضَــاح ص۱۸) (2) **बे छूए** ज़बानी देख कर (बे वुज़ू) पढ़ने में कोई **ह़रज** नहीं (3)क़ुरआने मजीद छूने के लिये या **सज्दए तिलावत या सज्दए शुक्र** के लिये **तयम्मुम** जाइज़ नहीं जब कि पानी पर क़ुदरत हो। (बहारे शरीअ़त, जि.1, ह़िस्सा : 2, स. 352) (4)जिस पर **ग़ुस्ल** फ़र्ज़ हो उस को **क़ुरआने मजीद** छूना अगर्चे इस का सादा ह़ाशिया या जिल्द या चोली छूए या बे छूए देख कर या ज़बानी पढ़ना या किसी आयत का लिखना या आयत का ता'वीज़ लिखना या ऐसा ता'वीज़ छूना या ऐसी अंगूठी छूना या पहनना जैसे **मुक़त्तआ़त**[1] की अंगूठी **ह़राम** है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 2, स. 326) (5) अगर क़ुरआने अ़ज़ीम जुज़्दान में हो तो जुज़्दान पर **हाथ** लगाने में ह़रज नहीं यूंही रुमाल वग़ैरा किसी ऐसे कपड़े से पकड़ना जो न अपना

मदینہ

1 : الٓمّٓ - کٓھٰیٰعٓصٓ - یٰسٓ - طٰہٰ - قٓ। वग़ैरा ह़ुरूफ़े **मुक़त्तआ़त** कहलाते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है। (अबू या'ला)

ताबेअ़ हो न कुरआने मजीद का तो **जाइज़** है, कुरते की आस्तीन, दुपट्टे के आंचल से यहां तक कि चादर का एक कोना इस के मूंढे (या'नी कन्धे) पर है दूसरे कोने से छूना **ह़राम** है कि येह सब इस के ताबेअ़ हैं जैसे चोली कुरआने मजीद के ताबेअ़ थी। (دُرِّمُختار، رَدُّالمُحتار ج١ص٣٤٨) **(6) कुरआन** का **तरजमा** फ़ारसी या उर्दू या किसी और ज़बान में हो उस के छूने और पढ़ने में कुरआने मजीद ही का सा **हुक्म** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 327) **(7)** किताब या अख़बार में आयत लिखी हो तो उस आयत पर नीज़ उस आयत वाले ह़िस्सए काग़ज़ के ऐन पीछे बे वुज़ू और बे गुस्ले को हाथ लगाना जाइज़ नहीं **(8)** जिस काग़ज़ पर सिर्फ़ आयत लिखी हो और कुछ भी न लिखा हो उस को आगे पीछे या कोने वग़ैरा किसी भी जगह पर बे वुज़ू और बे गुस्ला हाथ नहीं लगा सकता।

कलामे पाक के मौला عَزَّوَجَلَّ *मुझे आदाब सिखला दे*

मुझे का'बा दिखा दे गुम्बदे ख़ज़रा भी दिखला दे

किताबें छापने वालों की ख़िदमतों में म-दनी इल्तिजा

(9) दीनी किताबें और माहनामे वग़ैरा छापने वालों की ख़िदमतों

में दर्द भरी म–दनी इल्तिजा है कि सरे वरक़ (TITLE) के चारों सफ़्हों में से किसी भी सफ़्हे पर आयाते मुबा–रका या इन के तरजमे न छापा करें कि किताब या रिसाला लेते उठाते हुए बे शुमार मुसल्मान बे ख़याली में बे वुज़ू छूने में मुब्तला हो सकते हैं। इस ज़िम्न में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र–ज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 393 पर फ़रमाते हैं : आयए करीमा को अख़्बार की त़ब्लक़ (या'नी अख़्बार या रिसाले के बन्डल, पुलन्दे या गड्डी के गिर्द लिपटे हुए काग़ज़) या कार्ड या लिफ़ाफ़ों पर छपवाना बे अ–दबी को मुस्तल्ज़िम (या'नी लाज़िम करता) और **ह़राम** की त़रफ़ **मुन्जिर** (या'नी ले जाने वाला) है उस पर चिठ्ठी रसानों (या'नी डाकियों) वग़ैरहुम बे वुज़ू बल्कि जुनुब (या'नी बे ग़ुस्ल) बल्कि कुफ़्फ़ार के हाथ लगेंगे जो हमेशा जुनुब (या'नी बे ग़ुस्ले) रहते हैं और येह **ह़राम** है। قَالَ تَعَالٰی (अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया) لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ؕ (پ۲۷ الواقعة ۷۹) **(तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान :** इसे न छूएं मगर बा वुज़ू) मोहरें लगाने के लिये ज़मीन पर रखे जाएंगे फाड़ कर रद्दी में फेंके जाएंगे

इन बे हुर्मतियों पर आयत का पेश करना इस (या'नी छापने या लिखने वाले) का फ़े'ल हुवा।

کردم از عقل سوالے کہ بگو ایمان چیست عقل در گوشِ دلم گفت کہ ایمان ادب ست

(मैं ने अ़क़्ल से येह सुवाल किया तू येह बता दे कि ईमान क्या है, अ़क़्ल ने मेरे दिल के कानों में कहा कि ईमान अदब का नाम है)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

अगर किसी किताब के सरे वरक़ (TITLE) पर आयते कुरआनी छपी हुई देखें तो दर-ख़्वास्त है अच्छी अच्छी निय्यतें कर के किताब छापने वाले को मुन्दरिजए बाला तह़रीर दिखाइये या इस की फ़ोटो कापी ब ज़रीअ़ए डाक इरसाल फ़रमाइये और साथ में येह भी लिखिये कि आप की फ़ुलां किताब के सरे वरक़ पर आयते करीमा देखी तो तह़रीरी त़ौर पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हूं कि बराए करम ! सरे वरक़ पर आयाते मुबा-रका और इन के तरजमे न छापिये ताकि मुसल्मान बे ख़याली में बे वुज़ू छूने से मह़फ़ूज़ रहें। جزاك الله خيراً अगर पब्लीशर बुज़ुर्गाने दीन رحمھم اللہ المبین का आ़शिक़ हुवा तो اِنْ شَاءَ الله عَزَّوَجَلَّ आप को दुआ़ओं से नवाज़ते हुए आइन्दा एह़तियात़ की निय्यत का इज़्हार करेगा।

महफ़ूज़ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ *रखना सदा बे अ-दबों से*

और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अ-दबी हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"कुरआन" के चार हुरूफ़ की निस्बत से तर-ज-मए कुरआन के 4 म-दनी फूल

(1) बिग़ैर तफ़्सीर सिर्फ़ तर-ज-मए कुरआन न पढ़ा जाए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुबारक फ़तवे के एक जुज़ (या'नी ह़िस्से) का ख़ुलासा है : बिग़ैर इल्मे कसीर के सिर्फ़ तर-ज-मए कुरआन पढ़ कर समझ लेना मुम्किन नहीं, बल्कि इस में नफ़्अ़ के मुक़ाबले में नुक़्सान ज़ियादा है। तरजमा पढ़ना है तो किसी आ़लिमे माहिर कामिल सुन्नी दीनदार से पढ़े। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 23, स. 382, मुलख़्ख़सन) **(2)** कुरआने पाक को समझने के लिये मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, वलिय्ये ने'मत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (त़-बरानी)

सुन्नत, माहि़ये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का शोहरए आफ़ाक़ तर-ज-मए क़ुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" मअ़ तफ़्सीर "**ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान**" (अज़ ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद नई़मुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِىْ) ह़ासिल कीजिये (3) रोज़ाना क़ुरआने पाक की कम अज़ कम 3 आयात (मअ़ तरजमा व तफ़्सीर) की **तिलावत** के **म-दनी इन्आ़म**[1] पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें आप ख़ुद ही देख लेंगे (4) दा'वते इस्लामी के तन्ज़ीमी अन्दाज़ के मुत़ाबिक़ हर मस्जिद को एक ज़ैली ह़ल्क़ा क़रार दिया गया है। तमाम ज़ैली ह़ल्क़ों में रोज़ाना नमाज़े फ़ज्र के बा'द इज्तिमाई त़ौर पर **तीन आयात** की तिलावत मअ़

---

1 : सह़ीह़ इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्लामी भाइयों के लिये 72 और इस्लामी बहनों के लिये 63 म-दनी इन्आ़मात ब सूरते सुवालात दिये गए हैं कई ख़ुश नसीब रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" कर के ह़स्बे तौफ़ीक़ जवाबात की ख़ाना पुरी करते और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाते हैं। मुकम्मल त़रीक़ा जानने के लिये मक-त-बतुल मदीना से "म-दनी इन्आ़मात" नामी रिसाला ह़ासिल कीजिये। दा'वते इस्लामी की वेबसाइट (www.dawateislami.net) पर मक-त-बतुल मदीना के तक़रीबन सभी रसाइल देखे और इन के प्रिन्ट निकाले जा सकते हैं।

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान व तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान के **म-दनी ह़ल्क़े** का हदफ़ है। अगर मुयस्सर हो तो इस्लामी भाई इस में **शिर्कत** की सआ़दत पाएं।

"कन्ज़ुल ईमान" ऐ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ *मैं काश! रोज़ाना पढ़ूं*

पढ़ के तफ़्सीर इस की फिर उस पर अ़मल करता रहूं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالیٰ علی محمّد

"रब" के दो हुरूफ़ की निस्बत से मुक़द्दस अवराक़ को दफ़्न करने या ठन्डे करने के 2 म-दनी फूल

(1) अगर मुस्ह़फ़ (या'नी क़ुरआन) शरीफ़ पुराना हो गया, इस क़ाबिल न रहा कि उस में तिलावत की जाए और येह अन्देशा है कि इस के अवराक़ मुन्तशिर हो कर ज़ाएअ़ होंगे तो किसी पाक कपड़े में लपेट कर एह़तियात़ की जगह **दफ़्न** किया जाए और दफ़्न करने में इस के लिये **लह़द बनाई जाए** (या'नी गढ़ा खोद कर जानिबे क़िब्ला की दीवार को इतना खोदें कि सारे मुक़द्दस अवराक़ समा जाएं) ताकि उस पर मिट्टी न पड़े या (गढ़े में रख

कर) उस पर तख़्ता लगा कर छत बना कर मिट्टी डालें कि उस पर मिट्टी न पड़े, **मुस्ह़फ़ शरीफ़** पुराना हो जाए तो उस को जलाया न जाए । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 138, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची) **(2) मुक़द्दस अवराक़** कम गहरे समुन्दर, दरिया या नहर में न डालें जाएं कि उ़मूमन बह कर कनारे पर आ जाते और सख़्त बे अ-दबियां होती हैं । **ठन्डा करने का त़रीक़ा** येह है कि किसी थेली या ख़ाली बोरी में भर कर उस में वज़्नी पथ्थर डाल दिया जाए नीज़ थेली या बोरी पर चन्द जगह इस त़रह़ चीरे लगाए जाएं कि उस में फ़ौरन पानी भर जाए और वोह तह में चली जाए वरना पानी अन्दर न जाने की सूरत में बा'ज़ अवक़ात मीलों तक तैरती हुई कनारे पहुंच जाती है और कभी गंवार या कुफ़्फ़ार ख़ाली बोरी ह़ासिल करने के लालच में मुक़द्दस अवराक़ कनारे ही पर ढेर कर देते हैं और फिर इतनी सख़्त बे अ-दबियां होती हैं कि सुन कर उ़श्शाक़ का कलेजा कांप उठे ! मुक़द्दस अवराक़ की बोरी गहरे पानी तक पहुंचाने के लिये मुसल्मान कश्ती वाले से भी तआ़वुन ह़ासिल किया जा सकता है मगर बोरी में चीरे हर ह़ाल में डालने होंगे ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (कन्ज़ुल उम्माल)

मैं अदब कुरआन का हर ह़ाल में करता रहूं

हर घड़ी ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ *तुझ से मैं डरता रहूं*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

"कलामुल्लाह" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से मु-तफ़र्रिक़ 8 म-दनी फूल

(1) कुरआने मजीद को **जुज़्दान व ग़िलाफ़** में रखना अदब है । सह़ाबा व ताबिई़न رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡهُمۡ اَجۡمَعِیۡن के ज़माने से इस पर मुसल्मानों का अ़मल है । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 139) **(2)** कुरआने मजीद के **आदाब** में येह भी है कि इस की त़रफ़ **पीठ** न की जाए, न **पाउं** फैलाए जाएं, न पाउं को इस से ऊंचा करें, न येह कि ख़ुद **ऊंची** जगह पर हो और कुरआने मजीद नीचे हो । (ऐज़न) **(3) लुग़त** व नह़्व व सर्फ़ (तीनों उ़लूम) का एक (ही) मर्तबा है, इन में हर एक (इ़ल्म) की किताब को दूसरे की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है। (जामेअ़ सग़ीर)

किताब पर रख सकते हैं और इन से ऊपर **इल्मे कलाम** की किताबें रखी जाएं इन के ऊपर **फ़िक़्ह** और **अह़ादीस व मवाइज़ व दा'वाते मासूरा** (या'नी क़ुरआनो अह़ादीस से मन्क़ूल दुआ़एं) फ़िक़्ह से ऊपर और **तफ़्सीर** को इन के ऊपर और **क़ुरआने मजीद** को सब के ऊपर रखिये। क़ुरआने मजीद जिस सन्दूक़ में हो उस पर **कपड़ा** वग़ैरा न रखा जाए। (फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 5, स. 323, 324) **(4)** किसी ने मह़्ज़ **ख़ैरो ब-र-कत** के लिये अपने मकान में क़ुरआने मजीद रख छोड़ा है और तिलावत नहीं करता तो गुनाह नहीं बल्कि उस की येह निय्यत बाइ़से **सवाब** है। (फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, जि. 2, स. 378) **(5)** बे ख़याली में क़ुरआने करीम अगर हाथ से छूट कर या त़ाक़ वग़ैरा पर से ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया (या'नी गिर पड़ा) तो न गुनाह है न कोई कफ़्फ़ारा **(6)** गुस्ताख़ी की निय्यत से किसी ने مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक ज़मीन पर दे मारा या ब निय्यते तौहीन इस पर पाउं रख दिया तो **काफ़िर** हो गया **(7)** अगर क़ुरआने मजीद हाथ में उठा कर या इस पर हाथ रख कर ह़लफ़ या क़सम का लफ़्ज़ बोल कर कोई बात की तो येह बहुत "सख़्त क़सम" हुई और अगर ह़लफ़ या क़सम का लफ़्ज़ न बोला तो सिर्फ़ क़ुरआने करीम हाथ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़)

में उठा कर या उस पर हाथ रख कर बात करना न क़सम है न इस का कोई कफ़्फ़ारा । (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 13, स. 574, 575, मुलख़्ख़सन) **(8)** अगर मस्जिद में बहुत सारे क़ुरआने पाक जम्अ़ हो गए और सब इस्ति'माल में नहीं आ रहे, रखे रखे बोसीदा हो रहे हैं तब भी उन्हें हदिय्यतन दे कर (या'नी बेच कर) उन की क़ीमत मस्जिद में सर्फ़ नहीं कर सकते । अलबत्ता ऐसी सूरत में वोह क़ुरआने पाक दीगर मसाजिद व मदारिस में रखने के लिये तक़सीम किये जा सकते हैं ।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 16, स. 164, मुलख़्ख़सन)

हर रोज़ मैं क़ुरआन पढ़ूं काश ख़ुदाया عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *! तिलावत में मेरे दिल को लगा दे*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !   صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

"मदीना" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से ईसाले सवाब के 5 म-दनी फूल

(1) सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाकपढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (मजमउ़ज़्ज़वाइद)

है : **मुर्दे** का ह़ाल क़ब्र में डूबते हुए इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से **इन्तिज़ार** करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की **दुआ़** उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा **मु-तअ़ल्लिक़ीन** की त़रफ़ से हदिय्या किया हुवा **सवाब** पहाड़ों की मानिन्द अ़त़ा फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) मुर्दों के लिये "दुआ़ए मग़्फ़िरत करना है।" (شُعَبُ الْاِیمان ج٦ص٢٠٣حدیث٧٩٠٥) (2) **त़-बरानी** में है : "**जब** कोई शख़्स मय्यित को **ईसाले सवाब** करता है तो जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام उसे नूरानी त़बाक़ में रख कर क़ब्र के कनारे खड़े हो जाते हैं और कहते हैं : "**ऐ क़ब्र वाले !** येह हदिय्या (तोह़फ़ा) तेरे घर वालों ने भेजा है क़बूल कर।" येह सुन कर वोह **ख़ुश** होता है और उस के पड़ोसी अपनी मह़रूमी पर ग़मगीन होते हैं। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی ج٥ ص٣٧ حدیث٦٥٠٤ دار الفکر بیروت)

क़ब्र में आह ! घुप अंधेरा है
फ़ज़्ल से कर दे चांदना या रब عَزَّوَجَلَّ *!*

﴾3﴿ **तिलावते कुरआन** के साथ साथ **फ़र्ज़**, वाजिब, सुन्नत, नफ़्ल, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, ह़ज, बयान, दर्स, म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र, म-दनी इन्आ़मात, नेकी की दा'वत, दीनी किताब का मुत़ा-लआ़, म-दनी कामों के लिये इन्फ़िरादी कोशिश वग़ैरा हर नेक काम का **ईसाले सवाब** कर सकते हैं।

ईसाले सवाब का त़रीक़ा

﴾4﴿ "ईसाले सवाब" कोई मुश्किल काम नहीं सिर्फ़ इतना कह देना या दिल में निय्यत कर लेना भी काफ़ी है कि म-सलन "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने जो कुरआने पाक पढ़ा (या फुलां फुलां अ़मल किया) इस का सवाब मेरी वालिदए मर्हूमा को पहुंचा।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब पहुंच जाएगा।

फ़ातिह़ा का त़रीक़ा

﴾5﴿ **आज** कल मुसल्मानों में खुसूसन खाने पर **जो फ़ातिह़ा का त़रीक़ा** राइज है वोह भी बहुत अच्छा है, इस दौरान तिलावत वग़ैरा का भी ईसाले सवाब किया जा सकता है। जिन खानों का ईसाले सवाब करना है वोह सारे या सब में से थोड़ा थोड़ा खाना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अब्दुर्रज़्ज़ाक)

नीज़ एक गिलास में पानी भर कर सब कुछ सामने रख लीजिये।

अब أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○ पढ़ कर एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ﴿۳﴾
وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿۴﴾ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ؕ﴿۵﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿۶﴾

तीन बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾
وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (त-बरानी)

एक बार

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِکِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰہِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۬ۙ
الۡخَنَّاسِ ۪ۙ﴿۴﴾ الَّذِیۡ یُوَسۡوِسُ فِیۡ صُدُوۡرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الۡجِنَّۃِ وَ النَّاسِ ٪﴿۶﴾

एक बार

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ؕ﴿۳﴾
اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ؕ﴿۴﴾ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ
الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۬ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ٪﴿۷﴾

एक बार

الٓـمّٓ ۚ﴿۱﴾ ذٰلِکَ الۡکِتٰبُ لَا رَیۡبَ ۚۖۛ فِیۡہِ ۚۛ ہُدًی لِّلۡمُتَّقِیۡنَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ
بِالۡغَیۡبِ وَ یُقِیۡمُوۡنَ الصَّلٰوۃَ وَ مِمَّا رَزَقۡنٰہُمۡ یُنۡفِقُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ وَ الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ بِمَاۤ
اُنۡزِلَ اِلَیۡکَ وَ مَاۤ اُنۡزِلَ مِنۡ قَبۡلِکَ ۚ وَ بِالۡاٰخِرَۃِ ہُمۡ یُوۡقِنُوۡنَ ؕ﴿۴﴾ اُولٰٓئِکَ عَلٰی ہُدًی
مِّنۡ رَّبِّہِمۡ ٭ وَ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۵﴾

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (कन्ज़ुल उम्माल)

पढ़ने के बा'द येह पांच आयात पढ़िये :

﴿۱﴾ وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ﴿۱۶۳﴾ (پ۲ البقرۃ:۱۶۳)

﴿۲﴾ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِیْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۵۶﴾ (پ۸ الاعراف:۵۶)

﴿۳﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۰۷﴾ (پ۱۷ الانبیآء:۱۰۷)

﴿۴﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِیّٖنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمًا ﴿۴۰﴾ (پ۲۲ الاحزاب:۴۰)

﴿۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓىٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲ الاحزاب:۵۶)

अब दुरूद शरीफ़ पढ़िये :

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ صَلٰوةً وَّ سَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

इस के बा'द पढ़िये :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا یَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَ سَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۸۲﴾ (پ۲۳ الصّٰفّٰت۱۸۰-۱۸۲)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم **:** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है। (जामेअ सग़ीर)

अब हाथ उठा कर फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला बुलन्द आवाज़ से "**अल फ़ातिह़ा**" कहे। सब लोग आहिस्ता से सूरए फ़ातिह़ा पढ़ें। अब फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला इस त़रह़ ए'लान करे **:** "आप ने जो कुछ पढ़ा है उस का सवाब मुझे दे दीजिये।" तमाम ह़ाज़िरीन कह दें **:** "आप को दिया।" अब फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला **ईसाले सवाब** कर दे।

ईसाले सवाब के लिये दुआ का त़रीक़ा

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ा गया (अगर खाना वग़ैरा है तो इस त़रह़ से भी कहिये) और जो कुछ खाना वग़ैरा पेश किया गया है बल्कि आज तक जो कुछ टूटा फूटा अ़मल हो सका है उस का सवाब हमारे नाक़िस अ़मल के लाइक़ नहीं बल्कि अपने करम के शायाने शान मर्ह़मत फ़रमा। और इसे हमारी जानिब से अपने प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में नज़्र पहुंचा। सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तवस्सुत़

से तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तमाम औलियाए इज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की जनाब में नज़्र पहुंचा। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत से सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ले कर अब तक जितने इन्सान व जिन्नात **मुसल्मान** हुए या क़ियामत तक होंगे सब को पहुंचा। इस दौरान जिन जिन बुज़ुर्गों को खुसूसन ईसाले सवाब करना है उन का नाम भी लेते जाइये। अपने मां बाप और दीगर रिश्तेदारों और अपने पीरो मुर्शिद को भी **ईसाले सवाब** कीजिये। (फ़ौत शुदगान में से जिन जिन का नाम लेते हैं उन को खुशी ह़ासिल होती है)। अब ह़स्बे मा'मूल दुआ़ ख़त्म कर दीजिये। (अगर थोड़ा थोड़ा खाना और पानी निकाला था तो वोह खानों और पानी में वापस डाल दीजिये)

सवाब आ'माल का मेरे तू पहुंचा सारी उम्मत को
मुझे भी बख़्श या रब बख़्श उन की प्यारी उम्मत को

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (मजमउज़्ज़वाइद)

"इमामा बांधना सुन्नत है" के सतरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से इमामे के 17 म-दनी फूल

छ फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ﴾1﴿ इमामे के साथ दो रक्अ़त नमाज़ बग़ैर इमामे की सत्तर (70) रक्अ़तों से अफ़्ज़ल हैं (اَلْفِردَوس بمأثور الْخطّاب ج۲ ص۲٦٥ حدیث۳۲۳۳ دارالکتب العلمیة بیروت)

﴾2﴿ टोपी पर इमामा हमारे और मुश्रिकीन के दरमियान फ़र्क़ है हर पेच पर कि मुसल्मान अपने सर पर देगा इस पर रोज़े क़ियामत एक नूर अ़ता किया जाएगा (اَلْجامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطی ص ۳٥۳ حدیث٥۷۲٥)

﴾3﴿ बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं जुमुए़ के रोज़ इमामे वालों पर (اَلْفِردَوس بمأثور الْخطّاب ج۱ ص۱٤۷ حدیث٥۲۹)

﴾4﴿ इमामे के साथ नमाज़ दस हज़ार नेकियों के बराबर है (ऐज़न, जि. 2, स. 406, ह़दीस : 3805, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 220)

﴾5﴿ इमामे के साथ एक जुमुआ़ बग़ैर इमामे के सत्तर (70) जुमुओं़ के बराबर है (تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر ج۳۷ ص۳٥٥ دارالفکر بیروت)

﴾6﴿ इमामे अ़रब के ताज हैं तो इमामा बांधो तुम्हारा वक़ार बढ़ेगा और जो इमामा बांधे उस के लिये हर पेच पर एक नेकी है।

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطی ج٥ ص۲۰۲ حدیث ۱٤٥۳٦)

(7) दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ 312 स-फ़हात की किताब, **बहारे शरीअ़त** हिस्सा 16 स़फ्हा 303 पर है : इमामा खड़े हो कर बांधे और पाजामा बैठ कर पहने, जिस ने इस का उलटा किया (या'नी इमामा बैठ कर बांधा और पाजामा खड़े हो कर पहना) वोह ऐसे मरज़ में मुब्तला होगा जिस की दवा नहीं (8) मुनासिब येह है कि इमामे का पहला पेच सर की सीधी जानिब जाए। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 199)

(9) **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक इमामे का शिम्ला उ़मूमन पुश्त (या'नी पीठ मुबारक) के पीछे होता था और कभी कभी सीधी जानिब, कभी दोनों कन्धों के दरमियान दो शिम्ले होते, उलटी जानिब शिम्ले का लटकाना ख़िलाफ़े सुन्नत है। (اشعة اللّمعات ج۳ ص ۵۸۲)

(10) इमामे के शिम्ले की मिक्दार कम अज़ कम चार उंगल और ज़ियादा से ज़ियादा (आधी पीठ तक या'नी तक्रीबन) एक हाथ (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 182)

(11) इमामा क़िब्ला रू खड़े खड़े बांधिये।

(كَشْفُ الاِلْتِبَاس فِى اسْتِحْبَابِ اللِّبَاس لِلشَّيْخ عبدالْحَقّ الدّهلَوى ص۳۸)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم **:** जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (मजमउज़्ज़वाइद)

﴾12-13﴿ इ़मामे में सुन्नत येह है कि ढाई गज़ से कम न हो, न छ गज़ से ज़ियादा और इस की बन्दिश **गुम्बद नुमा** हो। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 186) ﴾14-15﴿ रुमाल अगर बड़ा हो कि इतने पेच आ सकें जो सर को छुपा लें तो वोह इ़मामा ही हो गया और छोटा रुमाल जिस से सिर्फ़ दो एक पेच आ सकें लपेटना मकरूह है (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 299) ﴾16﴿ इ़मामा उतारते वक़्त (बंधा बंधाया रख देने के बजाए) एक एक कर के पेच खोला जाए। (फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 5, स. 330) ﴾17﴿ **मुह़क़्क़िक़े अ़लल इ़त़्लाक़, ख़ा-तिमुल मुह़द्दिसीन,** ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं :

دَسْتارِمُبارَك آنحَضرَت صلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلَّم
دَر اَکْثَر سَفَید بُوَد وَگاہے سِیاہ اَحیاناً سَبْز

***नबिय्ये अकरम** का इ़मामा शरीफ़ अक्सर सफ़ेद, कभी सियाह और कभी **सब्ज़** होता था।*

(کَشْفُ الْاِلْتِباس فِی اسْتِحْبابِ اللِّباس ص۳۸دار احیاء العلوم باب المدینہ کراچی)